HAJJ BaituAllah

حج بیت اللہ

eBook

हज बैतुल्लाह

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नाम किताब ------------- हज़ बेतुल्लाह

तालीफ़ -------------- शोअबा तेहक़ीक़ो इशाअत

नाशिर ------------- अलहुदा पबलीकेशन्ज़

तारीख़ इशाअत ----------- अगसत 2015

ऐड़िशन -------------

तादाद ------------- 7,000

मिलने के पते

INDIA

Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+91-8040924255 | +91-9535612224
official email: alhuda.india@gmail.com

AMERICA

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

CANADA

5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

U.K.

14 Wangey Road Chadwell Heath
Essex RM6 4AJ London UK
+44-20-8599-5277 +44-78-8979-0369
alhudaproducts.uk@gmail.com

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الۡبَيۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ اِلَيۡهِ

سَبِيۡلًا... (آلِ عمران: 97)

" और लोगों पर अल्लाह का ये हक़ है कि जो उसकी तरफ़ जाने की इस्तिताअत रखता हो वो उसके घर का हज करे."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़ेहरिसत

1 इब्तदाइया

2 फ़रीज़ए हज

. हज के महीने
. हज की शराइत
. हज की अक़साम
. हज के अरकान
. हज के वाजिबात
. रवानगी से क़बल ज़रूरी उमूर
. सफ़र हज के लिए ज़रूरी अशया

3. सफ़र की दुआऐं

4. उमराह

. इख़लास
.एहराम
.नियत
. मस्जिद अलहराम में दाख़ला
.बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना
. तवाफ़
. तवाफ़ की दुआऐं
. मक़ाम इब्राहीम पर नमाज़
. आबे ज़म ज़म पीना
. सई
. हलक़ या क़सर

5. अय्यामे हज

. 8 ज़ुलहिज्जा,योमे अलतरविया
. 9 ज़ुलहिज्जा यौमे अरफ़ा
. मुज़दलफ़ा.
.10 ज़ुलहिज्जा यौमे अलनहर
. तवाफ़े ज़यारत या तवाफ़े अफ़ादा
. हज की सई
. अय्यामे तशरीक़
. तवाफ़े विदा

© AL-FIDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

6. सफ़र मदीना

. मस्जिद नबवी की फ़ज़ीलत

. मस्जिद में दाख़ला वा सलाम

. मदीना मुनव्वरा के मक़ामात फ़ज़ीलत

. ग़ैर मसनून उमूर

7. सफ़र वापसी

. वापसी की दुआऐं

. दआवते तआम

. हज के बाद

8. ज़मीमा जात

. क़याम मक्का वा मदीना के दौरान करने वाले काम

. नमाज़ जनाज़ा की अदायगी

. फ़र्ज़ नमाज़ के बाद के मसनून अज़कार

. क़ुरआनी वा मसनून दुआऐं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इब्तिदाइया

हज का लफ़्ज़ी मत्लब क़सद यानी इरादा करना है. इस्तिलाह में "शरियत के मुक़र्रर करदा दिनों मे मख़्सूस मक़ामात पर हाज़िर होकर,मुक़र्ररा इबादात की अदायगी को हज कहते हैं."

हज इस्लाम के बुनियादी अरकान में से एक रुक्न है जो साहिबे हैसियत इफ़राद पर ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है. हज अल्लाह की मुलाक़ात के लिए उसके घर की तरफ़ सफ़र करने,उसका तवाफ़ करने और उसकी ख़ातिर जिस्म व माल की क़ुरबानी देने का नाम है. ये अल्लाह से मोहब्बत की निशानी और उसका इज़्हार है.

हज़रत इब्राहीमعليه السلام और हज़रत इस्माईल عليه السلام के हाथों तामीर काबा के बाद अल्लाह ताला ने हज़रत इब्राहीमعليه السلام को हुक्म दिया.

وَاَذِّنۡ فِىۡ النَّاسِ بِالۡحَجِّ يَأۡتُوۡكَ رِجَالاً وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَأۡتِيۡنَ مِنۡ كُلِّ فَجٍّ عَمِيۡقٍ ٥ (الحج :27)

"और लोगों में हज का एलान करदो,वो तुम्हारे पास पैदल और दुबले ऊँटों पर हर दूर की घाटी से आऐंगे."

इस हुक्मे इलाही के बाद हज का बाक़ायदा आगाज़ हुआ. अल्लाह ताला ने अपने दोस्त हज़रत इब्राहीमعليه السلام उनकी बीवी हाजराعليه السلام और उनके बेटे इस्माईलعليه السلام के बाज़ मुख़्लिसाना आमाल को क़यामत तक के लिए मनासिके हज में शामिल कर दिया.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ईमान बिल्लाह के बाद हज सबसे अफ़ज़ल अमल है. हज का सवाब जिहाद के बराबर है और हज व उमरा करने वालों की दुआऐं क़ुबूल होती हैं.

हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه (अपने वालिद)हज़रत उमर رضي الله عنه से रिवायत करते हैं कि आपﷺ ने फ़रमायाः

اَلغَازِیُ فِیُ سَبِیُلِ اللّٰہِ وَالُحَاجُّ وَالُمُعُتَمِرُ وَفُدُ اللّٰہِ دَعَاھُمُ فَاَجَابُوہُ وَسَأَلُوہُ فَاَعُطَاھُمُ (سنن ابن ماجه)

"ग़ाज़ी फ़ी सबील अल्लाह,हज और उमरा करने वाले अल्लाह ताला के मेहमान हैं,अल्लाह ताला ने उनको बुलाया और उन्होंने हुक्म की तामील की और उन्होंने अल्लाह से मांगा तो अल्लाह ने उनको अता फ़रमाया."

हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः

اَلعُمُرَۃُ اِلَی العُمُرَۃِ کَفَّارَۃٌ لِمَا بَیُنَھُمَا وَالُحَجُّ الُمَبُرُوُرُ لَیسَ لَہٗ جَزَاءٌ اِلَّا الُجَنَّۃُ (متفق عليه)

" उमरा उन तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो मौजूदा और गुज़िश्ता उमरा के दर्मियान सरज़द हुए हों और हज मबरूर का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं."

हज मबरूर वो हज है जिसे ख़ालिस नियत के साथ अल्लाह की रज़ा के हुसूल के लिए,हलाल माल से,तमाम उसूल व क़वाइद

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

को सामने रखते हुए और तमाम ममनूआत से बचते हुए,नबीﷺ के सिखाए हुए तरीक़े के मुताबिक़ किया जाए.

जो शख़्स हज या उमरा के लिए जाते हुए रास्ते में फ़ौत हो जाए तो भी उसे हज व उमरा के बराबर सवाब मिलता है.

हज़रत अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाहﷺ ने फ़रमायाः

مَنْ خَرَجَ حَاجًّا اَوْ مُعْتَمِرًا اَوْ غَازِيًا ثُمَّ مَاتَ فِيْ طَرِيْقَةٍ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ

اَجْرَ الْغَازِيْ وَالْحَاجِّ وَالْمُعْتَمِرِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ (شعب الايمان)

“जो शख़्स हज या उमरा या जिहाद के इरादे से निकले और उसे रास्ते में मौत आजाए तो अल्लाह ताला उसे क़यामत के दिन ग़ाज़ी,हाजी या उमरा करने वाले के बराबर सवाब अता फ़रमाएगा.”

अल्लाह ताला आपको हज की नेअमतों और बरकतों से फ़ैज़याब करे. आमीन.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़रीज़ऐ हज

इरशादे बारी ताला है.

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (آلِ عمران : 97)

" और लोगों पर अल्लाह का ये हक़ है कि जो उसके घर तक पहुंचने की इस्तिताअत रखता हो वो उसका हज करे. और जिसने इन्कार किया तो बेशक अल्लाह ताला जहां वालों से बेनियाज़ है."

इस्तिताअत से मुराद रासते का सामान और सवारी का इन्तिज़ाम है.

(صحيح مسلم)

अबदुल्लाह बिन उमरرضي الله عنه कहते हैं रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ: شَهَادَةِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا
رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ

(صحيح بخاری)

"इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है. इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ये कि मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं,नमाज़ क़ाइम करना,ज़कात अदा करना,हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना." (सही बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हज के महीने

हज के महीने शवाल,ज़ुलक़ादा,ज़ुलहिज्जा हैं.हज तमत्तो करने वाले इन महीनों में मक्का मुकर्रमा पहुंच कर उमरा अदा करने के बाद हज के दिनों का इन्तिज़ार करते हैं.

हज की शराइत

०मुसलमान होना ०मालदार(साहिबे इस्तताअत)होना
०आज़ाद होना ०आक़िल होना ०बालिग़ होना
०सेहतमन्द होना ०रासते का पुरअमन होना
०हुकूमत की तरफ़ से रुकावट ना होना.

औरतों के लिए मज़ीद दो शरतें ये हैं:
०मेहरम का साथ होना ०हालत इद्दत में ना होना.

हज की अक़साम(क़िस्में)

०हज इफ़राद ०हज क़िरान ०हज तमत्तो

<u>हज इफ़राद:</u> उमरा के बग़ैर सिर्फ़ हज की नियत से एहराम बांधना. आमतौर पर मक्का के रहने वाले करते हैं.

<u>हज क़िरान:</u> मीक़ात से उमरा और हज दोनों की नियत से इकट्ठा एहराम बांधना और क़ुरबानी का जानवर साथ लेकर जाना मसनून है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

<u>हज तमत्तोः</u> मीक़ात से उमरे की नियत से एहराम बांधना और उमराह अदा करने के बाद खोल देना फिर आठ ज़ुलहिज्जा को हज की नियत से दोबारा एहराम बांधना हज तमत्तो सब से अफ़ज़ल हज है. दूसरे मुमालिक से जाने वालों के लिए इसमें ज़्यादा आसानी है.

हज के अरकान

▪एहराम ▪वक़ूफ़े अरफ़ा ▪ तवाफ़े ज़यारा़ह
▪ सई सफ़ा व मरवा कोई एक रुकन भी रहजाए तो हज नहीं होता.

हज के वाजिबात

▪मीक़ात से एहराम की नियत करना
▪ज़वाले आफ़ताब के बाद,मग़रिब तक अरफ़ात में वक़ूफ़ करना.
▪रात मुज़दलफ़ा में गुज़ारना
▪हलक़ या तक़सीर करना या करवाना
▪अय्याम तशरीक़ की रातें मिना में गुज़ारना
▪जमरात को कंकरियां मारना
▪तवाफ़े विदा करना

हज के वाजिबात में से कोई वाजिब रह जाए या उसमें ग़लती हो जाए और उसको लोटाना मुम्किन ना हो तो दम या फ़िदया से इसकी तलाफ़ी हो सकती है.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रवानगी से क़बल ज़रूरी उमूर

•अपनी नियत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए ख़ालिस करलें.
•क़र्ज़ ज़िम्मे हो तो अदा करदें.
•ख़ास उमूर(मामलात)से मुताल्लिक़ वसियत तेहरीर करें.
•मसारिफ़(ख़र्च) हज के हलाल होने का जायज़ा लें.
•हज के लिए रुहानी, जिस्मानी और इल्मी त्यारी करें.
•मर्द जमाअत से नमाज़ का एहतमाम करें.
•तिलावत क़ुरआन मजीद और अहादीस व सीरत की किताबों का मुतालेआ करें.
•दुआऐं याद करने का ख़ास एहतमाम करें.
•रोज़ाना चहल क़दमी करें.

सफ़र हज के लिए ज़रूरी अशया(चीज़ें)

•सामाने सफ़र ज़्यादा ना लें,ज़रुरी चीज़ों पर गुज़ारा करें.
•क़ुरआन मजीद,क़ुरआनी व मसनून दुआऐं और हज वा उमरा की रहनुमाई के लिए किताबें.
•पर्स,नोट बुक, क़लम,तसबीह, सफ़री जाऐ नमाज़,नेलकटर, छोटी केंची.
•ऐहराम के दो जोड़े,कमर की पेटी(बेलट),गले में लटकाने के लिए बेग.
•ज़ाती इस्तेमाल के चन्द जोड़े,चप्पल,जुराबें,सूई धागा,बटन, छतरी,एनक वग़ैरा.
•हाजी केमप के डाकटर से तसदीक़ करवाने के बाद इस्तेमाल की दवाईयां.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•जूते रखने के लिए कपड़े का बना थेला.
• ख़ुतबा हज सुन्ने के लिए छोटा रेडियो.
फ़ी सबील अल्लाह तक़सीम करने के लिए दुआओं की किताबें, किताब्चे और कार्ड वग़ैराह.

सफ़र की दुआऐं

घर से रवाना होते हुए नीचे लिखी हुई दुआऐं मांगें.

मुसाफ़िर घर वालों को दुआ दे.

• **اَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهٗ** (سنن ابن ماجه)

“मैं तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हुं जिसके पास रखी गई अमानतें ज़ाया नहीं होतीं."

घर वाले मुसाफ़िर को दुआ दें.

• **اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَ اَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ** (جامع ترمذى)

“मैं तेरा दीन,तेरी अमानत और तेरा आख़री अमल अल्लाह के सुपुर्द करता हुं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

• زَوَّدَکَ اللّٰهُ التَّقْوٰی وَغَفَرَ ذَنۡبَکَ وَیَسَّرَلَکَ الۡخَیۡرَ حَیۡثُ مَا کُنۡتَ (صحیح جامع ترمذی)

"अल्लाह ताला तुझे तक़वा का ज़ादे राह दे और तेरे गुनाह बख़्शदे और तेरे लिए ख़ैर का हुसूल आसान करदे जहां कहीं तू हो."

घर से निकलते वक़्त की दुआ

• بِسۡمِ اللّٰہِ تَوَکَّلۡتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوۡلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ (سنن ابی داؤد)

“अल्लाह के नाम के साथ, मैं अल्लाह ही पर भरोसा करता हुं अल्लाह की मदद के बग़ैर (किसी में)नेकी करने की और गुनाहो से बचने की ताक़त नहीं."

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ اَنۡ اَضِلَّ اَوۡ اُضَلَّ اَوۡ اَزِلَّ اَوۡ اُزَلَّ اَوۡ اَظۡلِمَ اَوۡ اُظۡلَمَ اَوۡ اَجۡھَلَ اَوۡ یُجۡھَلَ عَلَیَّ (سنن ابی داؤد)

“मैं इस बात से अल्लाह की पनाह मांगता हुं कि मैं गुमराह हुं या गुमराह किया जाऊं,बेहक जाऊं या बहकाया जाऊं या मैं(किसी पर)ज़ुल्म करुं या मुझपर ज़ुल्म किया जाऐ या मैं किसी के साथ जहालत से पेश आऊं या मेरे साथ कोइ जहालत से पेश आऐ."

पांव सवारी पर रखते हुऐ.

بِسۡمِ اللّٰہِ अल्लाह के नाम के साथ (तीन मर्तबा)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सवारी पर बेठने के बाद

- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ "तमाम तारीफ़ें अल्लाह ताला के लिए हैं."
- سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ o وَ اِنَّآ اِلٰی رَ بِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ o (الزخرف: 14-13)

“पाक है वो ज़ात जिसने इस(सवारी)को हमारे लिए मुसख़्ख़र किया वरना हम इसे क़ाबू में लाने वाले ना थे,और बेशक हम अपने रब ही की तरफ़ लौटने वाले हैं."

- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ(तीन मर्तबा) "तमाम तारीफ़ें अल्लाह ताला के लिए हैं."
- اَللّٰهُ اَكْبَرُ (तीन मर्तबा) "अल्लाह ही सबसे बड़ा है".
- سُبْحَانَکَ اِنِّیْ قَدْظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُالذُّنُوبَ اِلَّا اَنْتَ (جامع ترمذی)

“तू पाक है बेशक मैं ने(तेरी नाफ़रमानी करके) अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है,पस तू मुझे माफ़ करदे क्योंकि तेरे सिवा गुनाहों को कोई नहीं बख़्श सकता."

- اَللّٰهُمَّ اِنَّانَسْئَلُکَ فِیْ سَفَرِنَاهٰذَاالْبِرَّوَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَاتَرْضٰی،اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَاسَفَرَنَاهٰذَاوَاطْوِعَنَّابُعْدَهٗ ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَ الْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنۡ وَعۡثَآءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الۡمَنۡظَرِ وَسُوۡٓءِ الۡمُنۡقَلَبِ فِى الۡمَالِ وَ

الۡاَهۡلِ (صحیح مسلم)

"ऐ अल्लाह! बेशक हम आपसे सवाल करते हैं इस सफ़र में भलाई ,तक़वा और ऐसे अमल का जिस से आप राज़ी हो जाऐं. ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे सफ़र को आसान बनादे और इसके फ़ासलों को कम करदे. ऐ अल्लाह! इस सफ़र में आप ही हमारे साथी हैं और हमारे घर वालों के मुहाफ़िज़ हैं. ऐ अल्लाह! बेशक मैं इस सफ़र की तकलीफ़,परेशान कुन मनाज़िर और अपने माल और एहले ख़ाना की तरफ़ बुराई के साथ लौटने से आपकी पनाह चाहता हूँ -

दौराने सफ़र

बुलन्दी पर चढ़ते हुऐ(जहाज़ या पहाड़) اَللّٰهُ اَكۡبَرُ अल्लाह सबसे बड़ा है.

बुलन्दी से नीचे उतरते हुऐ سُبۡحَانَ اللّٰهِ पाक है अल्लाह

किसी जगह ठहरने पर

رَبِّ اَنۡزِلۡنِىۡ مُنۡزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنۡتَ خَيۡرُ الۡمُنۡزِلِيۡنَ ٥ (المؤمنون:29)

"ऐ मेरे रब! मुझे बरकत वाली जगह उतार और आप बेहतरीन उतारने वाले हैं."

رَبِّ اَدۡخِلۡنِىۡ مُدۡخَلَ صِدۡقٍ وَّاَخۡرِجۡنِىۡ مُخۡرَجَ صِدۡقٍ وَّاجۡعَلۡ لِّىۡ

مِنۡ لَّدُنۡكَ سُلۡطٰنًا نَّصِيۡرًا٥ (بنی اسرائیل:80)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ मेरे रब! मुझे सच्चाई के मुक़ाम पर दाख़िल कर और मुझे सच्चाई के मुक़ाम से निकाल और मेरे लिए अपने पास से मददगार क़ुव्वत मुहय्या फ़रमा."

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَاخَلَقَ (صحیح مسلم)

"मैं अल्लाह के असर करने वाले कलिमात के साथ तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूं. "

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उमराह

•उमराह मसनून इबादत है और आख़िरत में इसका अजर सवाब बहुत ज़्यादा है.
•उमराह करने से इन्सान का नफ़स गुनाहों के असरात से पाक होता है.

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: اَلْعُمْرَةُ اِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا
(صحیح بخاری)

“एक उमराह के बाद दूसरा उमराह इन के दर्मियान होने वाली (कमी,कोताही,ग़ल्ती या गुनाह)का कफ़्फ़ारा है."

•रमज़ान में उमराह अदा करने से नबी ﷺ के साथ हज करने के बराबर सवाब मिलता है." (सुन्न अबुदाउ)

इख़लास

अल्लाह सुबहाना वा तआला का इरशाद है:

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ (البقرۃ:196)

"और हज व उमराह अल्लाह के लिए पूरा करो."

एहराम

• एहराम की हालत में मरदों का लिबास दो सफ़ेद चादरों पर मुश्तमिल होगा. एक चादर बतौर तहबन्द और दूसरी चादर ओढ़ने के लिए इस्तेमाल करें.(मसनद एहमद)
एहराम की हालत में औरत के लिए कोई अलग लिबास सुन्नत

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

से साबित नहीं लेहज़ा ख़वातीन परदे के शरई एहकाम की पाबन्दी करते हुए अपने रोज़ाना के लिबास ही में नियत करें. (सही बुख़ारी)

एहराम की हालत में ममनू उमूर

•नाख़ुन और बाल काटना.
•ख़ुशबू लगाना या ख़ुशबू लगा कपड़ा इस्तेमाल करना.
•शिकार करना या करवाना.
•शोहर और बीवी का जिस्मानी ताल्लुक़ या किसी भी क़िसम की जिन्सी गुफ़्तगू करना.
•मंगनी या निकाह करना या करवाना.
•ख़वातीन का हालते एहराम में दसताने और नक़ाब इस्तेमाल करना.

<u>नोट</u>: जो बाल या नाख़ुन ख़ुद गिरजाऐं इन पर कोई दम या फ़िदया नहीं है.मर्दों के सामने आने या गुज़रने की सूरत में ख़वातीन चेहरा ढांप सकती हैं.

एहराम की हालत में जाइज़ उमूर

•एहराम से क़ब्ल ग़ुसल करके ख़ुशबू लगाना.
•ग़ुसल करना,सर धोना,कपड़े तबदील करना,सर और बदन खुजाना.
•बग़ैर ख़ुशबू वाला साबुन और तेल इस्तेमाल करना,छतरी या ख़ेमा इस्तेमाल करना.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•ना बजने वाला ज़ेवर पहन्ना,सुरमा इस्तेमाल करना,मरहम पटटी करना या करवाना.

•इल्म व अदब सिखाने के लिए बच्चे या मुलाज़िम को सरज़निश करना.

•मूज़ी जानवर(सांप,बिच्छू,चूहा,मक्खी,या जूं वग़ैरा)को बवक़्त ज़रूरत मारना.

नियत

•हज तमत्तो का इरादा करने वाले मीक़ात से لَبَّيكَ عُمرَہ कहकर सिर्फ़ उमराह की नियत करें. (सही मुस्लिम)

•हैज़ में होने के बावजूद ख़्वातीन मीक़ात से उमरा के एहराम की नियत करें.

•मर्द बुलन्द आवाज़ से जबके ख़्वातीन हल्की आवाज़ में तलबिया पढ़ें -

•तलबिया के मसनून अल्फ़ाज़ नीचे दिए हुए हैं. दौराने सफ़र ज़्यादा से ज़्यादा तलबिया पढ़ें.

لَبَّيْکَ اللّٰھُمَّ لَبَّيْکَ،لَبَّيْکَ لَاشَرِيْکَ لَکَ لَبَّيْکَ،اِنَّ الْحَمْدَ،

وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ،لَاشَرِيْکَ لَکَ (صحیح بخاری)

"मैं हाज़िर हूं ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूं, मैं हाज़िर हूं,तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हूं,बेशक हर तारीफ़,और हर नेमत और बादशाहत तेरे ही लिए है,तेरा कोई शरीक नहीं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•हज बदल(किसी की जगह हज करने वाला)नियत करते वक़्त उस फ़र्द का नाम ले जिसकी तरफ़ से हज किया जा रहा है.

शहर में दाख़िल होते वक़्त

• اَللّٰهُمَّ بَارِکْ لَنَا فِیْهَا (ثلاثا) (معجم للطبرانی)

“ऐ अल्लाह! इस (बसती,शहर,गाँव)में हमारे लिए बरकत अता फ़रमा." (तीन मरतबा)

• اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَ حَبِّبْنَا اِلٰی اَهْلِهَا وَ حَبِّبْ صَالِحِی اَهْلِهَا اِلَیْنَا (معجم للطبرانی)

“ऐ अल्लाह! हमें इस बसती के फलों से मुस्तफ़ीद फ़रमा और यहां के लोगों के दिलों में हमारी मोहब्बत डालदे और यहां के नेक अफ़राद को हमारे लिए मेहबूब बनादे."

मस्जिद अलहराम में दाख़ला

मस्जिद में दाखिल होते वक़्त अपना सीधा पांव मस्जिद में रखें और ये दुआ मांगें.

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ (سنن ابن ماجه)

"अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह के रसूल ﷺ पर सलाम हो, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमादे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोलदे."

बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना

मस्जिदे हराम में दाख़ले के बाद बैतुल्लाह को देखकर दुआ करें. (मसनद शाफ़ई)

तवाफ़

•सब से पहले बावुज़ु होकर तवाफ़ करें.

हज़रत उरवा बिन ज़ुबैरرضي الله عنه रिवायत करते हैं के नबी अकरम ﷺ के हज के बारे में हज़रत आयशाرضي الله عن ने मुझे बताया: जब नबी "मक्का तशरीफ़ लाए तो सब से पहले आप ﷺ ने वुज़ु किया फिर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया."(मुत्तफ़िक़ुन अलैह) तवाफ़ शुरु करने से पहले तलबिया पढ़ना बन्द करदें

•दौराने तवाफ़ मोबाइल पर बात करना,तसावीर बनाना या बनवाना इबादत की रूह को मुतास्सिर करता है इस लिए इन कामों से बचें.

•मर्द इज़तबा करें यानी अपनी ओढ़ी हुई चादर का एक हिस्सा दाईं कन्धे के नीचे से निकाल कर बाईं कन्धे पर डाल लें और दायां कन्धा खुला रखें-

•ख़्वातीन सतर और परदे के शरई एहकाम की पाबन्दी करते हुए तवाफ़ करें.

•तवाफ़ शुरु करने से पहले हजरे असवद के इस्तलाम(बोसा देना या हाथ या और किसी चीज़ से हजरे असवद को छू कर उसको बोसा देलेना) से करें. (जामे तिरमिज़ी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•بِسمِ اللهِ اَللهُ اَكبَر कहते हुए हजरे असवद का इस्तलाम करें. (मसनद एहमद)

•सिर्फ़ اَللهُ اَكبَر भी कह सकते हैं. (सही बुख़ारी)
•इस्तलाम ना करने की सूरत में दाईं हाथ से इशारा करें.
•तवाफ़ के हर चक्कर में بِسمِ اللهِ اَللهُ اَكبَر कहते हुए हजरे असवद का इस्तलाम करें या हाथ से इशारा करते हुए हजरे असवद की सीध में खड़े होकर यही अल्फ़ाज़ अदा करें.

•तवाफ़ के दौरान तिलावत क़ुरआन,तसबीह वा तहलील और दुआऐं वा अज़कार करते रहें. (हर चक्कर की कोई ख़ास दुआ सुन्नत से साबित नहीं)

•रुकने यमानी और हजरे असवद के दर्मियान ये दुआ मांगें.

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(البقرة:201)

“ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा,और हमें आग के अज़ाब से बचा."

•मर्द तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में रमल(कन्धे अकड़ाकर तेज़ चलना)करें और बाक़ी चार चक्करों में आम चाल चलें. औरतें आम चाल ही से तवाफ़ करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•दौराने तवाफ़ रुकने यमानी को सिर्फ़ छुऐं बोसा ना दें अगर छूना मुम्किन ना हो तो फिर बग़ैर इशारा किए गुज़र जाऐं.

(صحیح ابن خزیمه)

•दौराने तवाफ़ अगर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तवाफ़ रोक कर मर्द अपने दोनो कन्धे ढांप कर नमाज़ अदा करें.

•नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मर्द अपना दायां कन्धा खोल लें.

•पहले चक्करों को शुमार करते हुए बाक़ी चक्कर पूरे करके तवाफ़ मुकम्मल करें.

•ख़्वातीन भी नमाज़ बाजमाअत अदा करें और तवाफ़ के बाक़ी चक्कर. बाद में मुकम्मल करें.

•अदायगी नमाज़ के दौरान सफ़बन्दी की तरफ़ पूरी तवज्जा दें.

•फ़र्ज़ नमाज़ की मोजूदगी में कोई दुसरी नमाज़ नहीं होती,लेहाज़ा इस वक़्त सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ अदा करें.

•मस्जिदे हराम में तवाफ़ और नमाज़ ममनुआ ओक़ात(ज़वाल) में भी अदा कर सकते हैं. (जामे तिरमिज़ी)

•तवाफ़ मुकम्मल करने के बाद इज़्तबा ख़तम करदें.(सुनन अबुदाउद)

•एहराम,इज़्तबा और रमल सिर्फ़ उमरा के तवाफ़ के लिए हैं. तवाफ़े ज़ियारत तवाफ़े विदा या दुसरी नफ़ली तवाफ़ के लिए ना एहराम बांधें, ना इज़्तबा और रमल करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़

•तवाफ़ मुकम्मल करने के बाद

وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ اِبرَاهِيمَ مَصَلًّى (البقرة:١٢٥

आयत का कुछ हिस्सा पढ़ते हुऐ मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ आऐं.

•यहां तवाफ़ के दो रकअत नमाज़ नफ़िल अदा करें.

•पहली रकअत में **(قُل يَاَيُّهَا الكَافِرُونَ) سُورَةُ الكَافِرُونَ** और दूसरी रकअत में **(قُل هُوَ اللهُ اَحَدٌ) سُورَةُ الاِخلَاصِ** पढ़ें. (मुस्लिम)

नोट: मक़ाम इब्राहीम पर रश होने की वजह से ये नवाफ़िल बैतुल्लाह में किसी भी जगह पढ़लें.

आबे ज़म ज़म पीना

•ज़म ज़म का पानी खड़े होकर पिऐं. (सही बुख़ारी)

•आबे ज़म ज़म पिऐं और इसका कुछ हिस्सा सर पर बहाऐं. (मुसनद एहमद)

•ज़म ज़म पीने से पहले दुआ मांगें.

आप ﷺ ने फ़रमाया:

مَاءُ زَمزَمَ لِمَا شُرِبَ لَهُ (سنن ابن ماجه) :

ज़म ज़म का पानी इस(मक़सद)के लिए है जिसके लिए पिया जाता है.

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه जब आबे ज़म ज़म पीते तो ये दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسئَلُكَ عِلمًا نَّافِعًا وَ رِزقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّن كُلِّ دَاءٍ

(فقه السنة)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नफ़ा पहुंचाने वाला इल्म और फ़राख़ रोज़ी और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हुं.”

•काबा के दरवाज़े और हजरे असवद के दर्मियान का हिस्सा मुलतज़िम है. ज़म ज़म पीने के बाद मुम्किन हो तो मुलतज़िम से चिमट कर दुआ मांगें.(फ़िक़्ह अलसुन्ना)

सई

•इबादत की नियत से सफ़ा मरवा के दर्मियान सात चक्कर लगाना सई कहलाता है. सफ़ा से मरवा तक एक और मरवा से सफ़ा तक दूसरा चक्कर शुमार करके सात चक्कर पूरे करें.

•ये हज और उमरा दोनों का रुकन है. आप ﷺ ने फ़रमाया:

كُتِبَ عَلَيْكُمُ السَّعْىُ فَاسْعَوْا (صحيح ابن خزيمه)

“ तुम पर सई फ़रज़ की गई है पस सई करो."

सफ़ा मरवा की सई के लिए आने से पहले हजरे असवद का इसतलाम करें. (जामे तिरमिज़ी)

•باب الصّفا से सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ आऐं.

जब पहाड़ी क़रीब आए तो اِنَّ الصَّفَاوَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِاللّٰهِ

“बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह ताला की निशानियों में से हैं.”

(البقرة :158)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَبدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ بِه "इबतदा करता हुं जिस से अल्लाह तआला ने इबतदा की."

पढ़ते हुए सफ़ा पहाड़ी पर इतना चढ़ें के बैतुल्लाह नज़र आने लगे फिर क़िबला रुख़ होकर तीन मरतबा اَللهُ اَكبَر कहें और नीचे लिखे कल्मात तीन मरतबा अदा करें.

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيءٍ قَدِيرٌ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحدَهُ

اَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَاب (صحیح مسلم)

"अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं,वो अकेला है,उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही और तारीफ़ उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है,अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं वो अकेला है. उसने अपना वादा पूरा किया,और अपने बन्दे की मदद की,और तमाम लशकरों को तन्हा शिकस्त दी." (सही मुस्लिम)

•सफ़ा पहाड़ी से मरवा की तरफ़ आते हुए,मर्द सब्ज़ सुतूनों के दरमियान दौड़ें. (सही मुस्लिम)

•ख़्वातीन मामूल की चाल चलें. (मसनद शाफ़ई)

•मरवा पहाड़ी पर चढ़ते हुए और चढ़ने के बाद सफ़ा पर किया हुआ अमल दोहराऐं. (सही मुस्लिम)

•सई करते हुए कसरत से ज़िक्र वा दुआ,तसबीह वा तहलील और हमदो सना करें. (सही इब्ने ख़ुज़ेमा)

•किसी शरई उज़्र की वज्ह से सई सवार होकर भी कर सकते हैं. (शरह अलसुन्नत)

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•सई के दौरान फ़र्ज़ नमज़ का वक़्त हो जाए तो सई छोड़ कर बाजमाअत नमाज़ अदा करें.

•नमाज़ के बाद पहले चक्कर शुमार करते हुए बाक़ी चक्कर मुकम्मल करलें. ख़्वातीन भी इसकी पाबन्दी करें.

हलक़ या क़सर(बाल मुंडवाना या कतरवाना)

•सई के बाद मर्द अपना सर मुंडवाऐं या सर के बाल कतरवाऐं. (सही मुस्लिम)

•मर्दों के लिए बाल कतरवाने से ज़्यादा अफ़ज़ल है के सर मुंडवाऐं. (सही मुस्लिम)

•ख़्वातीन एक या दो पोर यानी (उंगली के बराबर अपने) बाल काटें. (सही अबुदाऊद)

•बाल काटने के अमल के साथ ही अलहमदोलिल्लाह आपका उमराह मुकम्मल हो गया.

•हज तमत्तो की नियत करने वालों के लिए एहराम की पाबन्दियां ख़तम हो गईं. जबके हज क़िरान की नियत करने वाले बदसतूर एहराम की पाबन्दियों का लेहाज़ रखें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अय्यामे हज

8 ذُوالْحَجَّةِ، يَوْمُ التَّرْوِيَةَ

•हज तमत्तो की नियत करने वाले अफ़राद ग़ुसल करके अपनी क़याम गाह से एहराम बांधें. (सही मुस्लिम)

•لَبَّيكَ حَجًّا कहकर हज की नियत करें. (सही मुस्लिम)

•नियत करने के बाद एक बार ये कल्मात अदा करें.

اَللّٰهُمَّ حِجَّةٌ لَارِيَاءَ فِيهَا وَلَا سُمْعَةَ (سنن ابن ماجه)

"ऐ अल्लाह! मेरे इस हज से ना दिखावा मक़सूद है और ना शोहरत मतलूब है." (सुनन इब्ने माजा)

•इसके बाद तल्बिया पढ़ें.

لَبَّيْکَ اللّٰھُمَّ لَبَّيْکَ،لَبَّيْکَ لَاشَرِيْکَ لَکَ لَبَّيْکَ،اِنَّ الْحَمْدَ

وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ ،لَاشَرِيْکَ لَکَ (صحيح بخاری

“मैं हाज़िर हुं ऐ अल्लाह! में हाज़िर हुं, मैं हाज़िर हुं,तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हुं,बेशक हर तारीफ़,और हर नेमत और तेरे ही लिए बादशाहत है,तेरा कोई शरीक नहीं."

•ख़्वातीन हालते हैज़ में भी एहराम की नियत करें वो तवाफ़ के अलावा बाक़ी तमाम अरकान अदा करें.

•मक्का से मिना के लिए रवाना हों और ज़ोहर से पहले मिना पहुंच जाएं.

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•मिना में पांच नमाज़ें ज़ोहर,असर,मग़रिब,इशा क़सर के साथ और फ़जर अपने अपने वक़्त पर अदा करें. (सही मुस्लिम)

•रात को मिना में क़याम करें.

9 ذُوالْحَجَّةِ ،يَوْمُ الْعَرَفَةِ

•9 ज़ुलहज्जा तुलु आफ़ताब के बाद मिना से अरफ़ात के लिए निकलें. (सही मुस्लिम)

•मिना से अरफ़ात जाते हुए तकबीर(اَللهُ اَكبَر),
तहलील(لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحدَهُ) और तलबिया(لَبَّيكَ اللهُمَّ لَبَّيكَ) पुकारें.
(सही मुस्लिम)

तकबीर वा तहलील

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ،

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ،

اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

" अल्लाह सब से बड़ा है,अल्लाह सब से बड़ा है,अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं,अल्लाह सब से बड़ा है,अल्लाह सब से और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है."

تلبیہ: لَبَّیْکَ اللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ،لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ،اِنَّ الْحَمْدَ،وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ، لَاشَرِیْکَ لَکَ (صحیح بخاری)

“मैं हाज़िर हुं ऐ अल्लाह! में हाज़िर हुं, मैं हाज़िर हुं,तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हुं,बेशक हर तारीफ़,और हर नेमत और हर बादशाहत तेरे ही लिए है,तेरा कोई शरीक नहीं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•मस्जिद नमरा में ज़वाले आफ़ताब के बाद ख़ुतबा हज पूरी तवज्जा और ख़ामोशी से सुनें.

•ज़ोहर और असर की नमाजें एक अज़ान और दो अक़ामत के साथ जमा और क़सर करके बाजमाअत अदा करें. (सही मुस्लिम)

रश की वजह से मस्जिदे नमरा ना पहुंच पाएं तो कोइ हरज नहीं, अपनी जगह ही पर नमाज़ बाजमाअत अदा करें.

•दोनों नमाज़ों के दरम्यिान कोई सुन्नत या नफ़िल ना पढ़ें.

•ज़ोहर और असर की नमाज़ें अदा करने के बाद मैदाने अरफ़ात में दाख़िल हों. रश की वजह से मुम्किन ना हो तो पहले भी दाख़िल हो सकते हैं.

•वक़ूफ़ के लिए मैदाने अरफ़ात में खड़े होकर ख़ैमे के अन्दर या बाहर क़िबला रु होकर अलग अलग इन्किसारी वा ज़ारी के साथ दुआऐं मांगें.

•किसी उज़्र की वज्ह से 9 ज़ुलहिज्जा के दिन ज़वाले आफ़ताब से ग़ुरुबे आफ़ताब तक हाजी मैदाने अरफ़ात ना पहुंच पाए तो 10 ज़ुलहिज्जा की तुलु फ़ज्र तक अरफ़ात पहुंच जाऐं. (سنن نسائی)

•हज करने वाले के लिए इस दिन का रोज़ा नहीं है और ना ही इस दिन की कोई नफ़िल नमाज़ें हैं-ज़्यादा से ज़्यादा दुआऐं मांगें और ज़िक्र इलाही करें.

•अरफ़ात क़ुबुलियत दुआ की बहतरीन जगह और यौमे अरफ़ा क़ुबुलियत दुआ का बहतरीन दिन है.

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•नबी ﷺ ने फ़रमाया: " अरफ़ा के दिन के सिवा कोई और दिन एसा नहीं है जिस में अल्लाह कसरत से बन्दों को आग से आज़ाद करता हो और फ़रिशतों के सामने इन(हाजियों)की वज्ह से फ़ख़र करता और फ़रिशतों से पूछता है के ये लोग क्या चाहते हैं."

(صحیح مسلم)

•इस क़ीमती वक़त से भरपूर फ़ायदा उठाऐं.

•अरफ़ा के दिन की बहतरीन दुआ जो अम्बिया अलैहिम अस्सलाम ने मांगी:

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ (جامع ترمذی)

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वो अकेला है,उसका कोई शरीक नहीं,उसी की बादशाहत है और सब तारीफ़ उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है."

•वक़ुफ़े अरफ़ा फ़र्ज़ है,रह जाए तो हज अदा नहीं होता ना ही फ़िदया देने से इसकी तलाफ़ी होती है.

हज़रत अबदुर्रहमान बिन यामर رضي الله عنه कहते हैं कें मैं नबी अकरम ﷺ के पास था के कुछ लोग आए और हज के बारे में पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया:

اَلْحَجُّ عَرَفَةُ فَمَنْ اَدْرَكَ لَيْلَةَ عَرَفَةَ قَبْلَ طُلُوْعِ الْفَجْرِ مِنْ لَيْلَةِ

جَمْعٍ فَقَدْ تَمَّ حَجُّهٗ (سنن نسائی)

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

" हज अरफ़ात में ठहरने का नाम है जो शख़्स मुज़दलफ़ा की रात(यानी 9 और 10 ज़ुलहिज्जा की दरम्यिानी रात)तुलु फ़ज्र से पहले मैदाने अरफ़ात में पहुंच गया उसका हज अदा हो गया."

मुज़दलफ़ा

•सूरज ग़ुरूब होते ही नमाज़े मग़रिब अदा किए बग़ैर,इत्मिनान और वक़ार के साथ,अरफ़ात से मुज़दलफ़ा रवाना हों और वहां पहुंचकर मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा क़सर अदा करें. (सही मुस्लिम)

•दोनों नमाजें एक अज़ान और दो अक़ामत के साथ अदा करें और दोनों नमाज़ों के दर्मियान कोइ सुन्नत या नफ़िल ना पढ़ें. (सही बुख़ारी)

•मुज़दलफ़ा की रात सोकर गुज़ारें.

•मुज़दलफ़ा में रात बसर ना कर सकने की सूरत में जानवर की क़ुरबानी दें.

•ख़्वातीन,बच्चे और कमज़ोर बुज़ुर्ग चाहें तो आधी रात के बाद मिना चले जाऐं.

•नमाज़ फ़जर,फ़जर के वक़त से ज़रा पहले अदा करें. (सही बुख़ारी)

•नमाज़ फ़जर के बाद अच्छी तरह रोशनी फेलने तक,अपनी अपनी क़याम गाह पर, क़िबला रुख़ खड़े होकर,हाथ उठाकर दुआऐं मांगें. (सही बुख़ारी)

•मुज़दलफ़ा से मिना जाते हुए चाहें तो रमी के लिए चने के दाने से कुछ बड़ी कंकरियां चुनलें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

10 ذُوْ الْحَجَّةِ، يَوْمُ النَّحْرِ

•नमाज़ फ़जर के बाद सूरज तुलु होने से पहले जब रोशनी फैल जाए तो मिना के लिए रवाना होजाऐं और रासते में कसरत से तल्बिया पढ़ें.

لَبَّیْکَ اللّٰهُمَّ لَبَّیْکَ،لَبَّیْکَ لاَ شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ،اِنَّ الْحَمْدَ
وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ،لاشَرِیْکَ لَکَ (صحیح بخاری)

“मैं हाज़िर हुँ ऐ अल्लाह! में हाज़िर हुं, मैं हाज़िर हुं,तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हुं,बेशक हर तारीफ़,और हर नेमत और बादशाहत तेरे ही लिए है,तेरा कोई शरीक नहीं."(सही बुख़ारी)

•मुज़दलफ़ा से मिना आते हुए सुकून और वक़ार के साथ आऐं अलबत्ता वादई मुहस्सर से तेज़ी से गुज़रें. (सही मुस्लिम)

•मिना पहुंच कर जमरह उक़बा की रमी करें. (सही मुस्लिम).

रमी से पहले तल्बिया कहना बन्द करदें,जमराह उक़बा को सात कंकरियां अलग अलग मारें. (सही बुख़ारी)

•हर कंकरी मारते वक़्त بِسمِ اللہِ اَللہُ اَکبَر या اَللہُ اَکبَر पढ़ें.

•कंकरियां मारने के बाद यहां दुआ के लिए ना रुकें. (सही बुख़ारी)

•बुज़ुर्ग, कमज़ोर, बीमार और ख़्वातीन के लिए गुन्जाइश है कि कंकरियां मारने के लिए अपनी तरफ़ से कोई नाइब मुक़र्र करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•जमरा उक़बा की रमी का अफ़ज़ल वक़्त चाशत का वक़्त है अलबत्ता उज़्र या रश की वज्ह से गुन्जाइश है के 11 ज़ुलहिज्जा की तुलु फ़ज्र तक कंकरियां मारलें.

•जमरा उक़बा की रमी के बाद क़ुरबानी करें.

•10 ज़ुलहिज्जा की सुब्ह से लेकर 13 ज़ुलहिज्जा के ग़ुरुबे आफ़ताब तक क़ुरबानी कर सकते हैं. (सुन्न बहीक़ी)

•मिना या मक्का में किसी भी जगह पर हज की क़ुरबानी करें. (सुन्न अबु दाउद)

•इस्तताअत के मुताबिक़ एक से ज़्यादा जानवर क़ुरबान कर सकते हैं. (सही मुस्लिम).

•हज तमत्तो और हज क़िरान करने वालों के लिए क़ुरबानी वाजिब है जो क़ुरबानी ना कर सकें वो हज के दिनों में तीन और घर जाकर सात रोज़े रखें. (सही बुख़ारी)

•क़ुरबानी के बाद मर्द हलक़(सर मुंडवाना) या तक़सीर (बाल कतरवाना)करवाऐं,औरतें सिर्फ़ तक़सीर करें.

•बाल कटवाने से अफ़ज़ल है के बाल मुंडवाऐं. (सही मुस्लिम).

•हलक़ या तक़सीर के बाद बीवी के सिवा तमाम चीज़ें जो एहराम की वजह से हराम थीं अब हलाल हैं.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

तवाफ़े ज़यारत या तवाफ़े अफ़ादा

•10 ज़ुलहिज्जा आख़री काम तवाफ़े ज़यारत करें.

•तवाफ़े ज़यारत हज का फ़र्ज़ रुकन है,अगर अदा करने से रह जाए हज अदा नहीं होता ना ही फ़िदया देने से इसकी तलाफ़ी होती है.

•मुम्किन हो तो ग़ुस्ल करें वरना कपड़े तब्दील करके आम लिबास में तवाफ़ करें.

•तवाफ़ ज़यारत में ना एहराम बांधें, ना इज़तबा और रमल करें.

•तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम(अ)के क़रीब दो रकअत नमाज़ नफ़िल अदा करें. (तवाफ़ के तफ़सीली एहकाम उमराह के बाब में देखें)

•किसी वज्ह से इस दिन तवाफ़ ना कर सकें तो अय्यामे तशरीक़ (11 से 13 ज़ुलहिज्जा) में करें.

•बीमार सेहत याब होने के बाद और हायज़ा पाक होने के बाद तवाफ़ करें.

•तवाफ़े ज़ियारत के बाद एहराम की तमाम पाबन्दियां ख़तम हो गई हैं हत्ता के बीवी के साथ ताल्लुक़ की पाबन्दी भी ख़तम है. (सुनन अबुदाउद)

हज की सई

•हज तमत्तो करने वाले तवाफ़ ज़ियारत के बाद हज की सई करें. (सई के एहकामात उमराह के बाब में बयान किए जा चुके हैं)

•रमी,क़ुरबानी,हलक़ या तक़सीर,तवाफ़े ज़यारत या सई को इसी तरतीब के साथ करें,अलबत्ता किसी वज्ह से तरतीब में फ़र्क़ आजाए तो कोई हरज नहीं. (सही बुख़ारी)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•सई के बाद रात वापस मिना आकर गुज़ारें.

अय्यामे तशरीक़

•अय्यामे तशरीक़ 11,12,13 ज़ुलहिज्जा अजर वा सवाब के एतबार से साल के बाक़ी दिनों से अफ़ज़ल हैं.

•मिना में मस्जिद ख़ैफ़ के क़रीब रहने वाले हुज्जाज नमाज़ें बाजमअत,क़सर करके मस्जिद में अदा करें,दूर रहने वाले अपने ख़ेमों में ही नमाज़ बाजमाअत,क़सर का एहतमाम करें.
(मोअज्जम लिलतबरानी)

•अय्यामे तशरीक़ में रोज़ाना ज़वाल आफ़ताब के बाद तीनों जमरात (जमरा ऊला,जमरा वुसता,जमरा उक़बा)की तरतीब से रमी करें. (सही बुख़ारी)

•सऊदी उल्मा ने रश की वज्ह से और लोगों की सहूलत के लिए औक़ात में कुछ वुसअत दी है उसको इख़्तियार करें.

•तरतीब में कुछ ग़ल्ती होजाए तो दुबारा सही तरतीब के साथ रमी करें या एक जानवर की क़ुरबानी दें.
•हर जमरा को सात कंकरियां अलग अलग,मारें. हर कंकरी मारते वक़्त اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ें.

•जमरा ऊला और जमरा वुसता को कंकरियां मारने के बाद ज़रा हटकर क़िबला रुख़ होकर दुआ करें जमरा उक़बा के क़रीब दुआ ना करें. (सही बुख़ारी)
•अय्यामे तशरीक़ अल्लाह के ज़िक्र के लिए हैं इस लिए इनमें ख़ूब अल्लाह का ज़िक्र करें,इस दौरान अगर मुम्किन हो तो मक्का जाकर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बैतुल्लाह का नफ़ली तवाफ़ भी करें. (सही बुख़ारी)

•अय्यामे तशरीक़ के तीनों दिन मिना में गुज़ारें. (सुन्न अबु दाऊद)

•12 ज़ुलहिज्जा को मक्का वापस जाना चाहें तो उस दिन की रमी करें और सूरज ग़ुरूब होने से पहले मिना से निकल जाऐं. (सुन्न बहीक़ी)

•12 ज़ुलहिज्जा को मिना में सूरज ग़ुरुब हो जाने की सूरत में 13 ज़ुलहिज्जा की रात मिना में गुज़ारें और दिन को रमी करें.

तवाफ़े विदा

•हज मुकम्मल करने के बाद मक्का से रुख़सत होने से क़बल तवाफ़े विदा करें.

•तवाफ़े विदा हज के वाजिबात में से है. रसूल अल्लाह ﷺ का फ़रमान है:

"अल्लाह के घर से आख़री मुलाक़ात के बग़ैर तुम में से कोई वापसी इख़्तियार ना करे." (सही मुस्लिम).

•हायज़ा अगर तवाफ़े ज़यारत कर चुकी है तो वो तवाफ़े विदा के बग़ैर मक्का छोड़ सकती है, इस पर कोई दम नहीं है.

الحمد لله आपका हज मुकम्मल होगया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सफ़रे मदीना

•हज से पहले या बाद मदीना मुनव्वरा का सफ़र करना होगा. इस सफ़र को भी बाइसे सआदत समझें.

मदीना हरम नबवी ﷺ और नुज़ूल वही का मुक़ाम है. आप ﷺ ने फ़रमाया:

اِنَّ اِبْرَاهِيْمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَاِنِّىْ اُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَايُرِيْدُ الْمَدِيْنَةَ

(صحيح مسلم)

"बेशक इब्राहीम(अ)ने मक्का को हरम बनाया और में इस शहर के दो पथरीले अतराफ़ के दर्मियान के इलाक़े यानी मदीना को हरम क़रार देता हूं."

•मदीनातुन्नबी ﷺ का सफ़र मोहब्बतों का सफ़र है और इस राहे उलफ़त में संभल कर चलें और हर काम आप ﷺ के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ करें.

आप ﷺ ने फ़रमाया:

اَلْـمَدِيْنَةُ حَرَمٌ مَا بَيْنَ عَيْرٍ اِلٰى ثَوْرٍ فَمَنْ اَحْدَثَ فِيْهَا حَدَثًا اَوْ آوٰى مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا ...(صحيح مسلم)

"मदीना ईर से सौर तक हरम है लेहाज़ा जो कोई इसमें नया काम (बिदत)निकाले या नए काम निकालने वाले को जगह दे,इस पर अल्लाह,फ़रिश्तों और सब इन्सानों की लानत है. इस से क़यामत के दिन नफ़िल और फ़रज़ क़ुबूल नहीं किए जाऐंगे "

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•मदीना मुनव्वरा की खजूर अजवा से फ़ायदा उठाऐं.

•रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:"जो शख़्स सुब्ह के वक़्त सात अदद अजवाह खजूरें खाए गा वो उस दिन ज़ेहर और जादू के नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा." (मुत्तफ़िक़ अलैह)

मस्जिदे नबवी की फ़ज़ीलत

•हज़रत अबु हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "तीन मसाजिद के सिवा किसी और मस्जिद का सफ़र(सवाब की नियत से) ना किया जाए,मस्जिदे हराम(ख़ाना काबा),मेरी ये मस्जिद(मस्जिदे नबवी صلى الله عليه وسلم)और मस्जिदे अक़्सा." (सही मुस्लिम)

•हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:"मेरी इस मस्जिद में नमाज़ का सवाब बाक़ी मसाजिद के मुक़ाबले में हज़ार गुना ज़्यादा है सिवाए मस्जिदे हराम के." (सही मुस्लिम).

मसजिद में दाख़ला व सलाम

• بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ (سنن ابن ماجه)

"अल्लाह के नाम के साथ,अल्लाह के रसूल ﷺ पर सलाम हो. ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमादे और मेरे लिए अपनी रेहमत के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

दरवाज़े खोलदे." (सुनन इब्नेमाजा)

•मस्जिदे नबवी में दाख़िल होने के बाद तहय्यातुल मस्जिद अदा करें.

•हुजरा मुबारक की तरफ़ रुख़ करके नबी ﷺ पर सलाम भेजें.

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ (سنن بیھقی)

"ए रसूल अल्लाह ﷺ , आप पर सलाम हो."

•इसके साथ साथ दरुदे इब्राहीमी पढ़ें.

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ، اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (صحیح بخاری)

"ऐ अल्लाह मोहम्मद ﷺ और आले मोहम्मद ﷺ पर इस तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम(अ) और आले इब्राहीम(अ)पर रहमत नाज़िल फ़रमाई थी,बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला और बुज़ुर्गी वाला है,ऐ अल्लाह! मोहम्मद पर और आले मोहम्मद ﷺ पर इस तरह बरकतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम(अ)और आले इब्राहीम(अ)पर बरकतें नाज़िल फ़रमाईं,बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला और बुज़ुर्गी वाला है."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फिर अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه और उमर رضي الله عنه पर इस तरह सलाम भेजें.

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَبَابَکْرِ الصِّدِّیْقُ ،

“ए अबु बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه आप पर सलाम हो."

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یا عُمَرُالْفَارُوْقُ (سنن بیھقی)

"ए उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه आप पर सलाम हो." (सुनन बहीक़ी)

•मस्जिदे नबवी ﷺ में कसरत से नवाफ़िल,तिलावत क़ुरआन मजीद,दरूद शरीफ़ पढ़ें और जिक्र अज़कार करें.

•सीरत रसूल ﷺ अहादीसे मुबारका और दूसरी अच्छी किताबों का मुतालेआ करें .

रोज़ातुल जन्नाह में धक्का और दूसरों को अज़ियत दिए बग़ैर नफ़िल अदा करने का मौक़ा मिल जाए तो फ़ायदा उठाऐं. नबी ﷺ ने फ़रमाया:

مَـا بَیْنَ بَیْتِیْ وَمِنْبَرِیْ رَوْضَةٌ مِنْ رِّیَاضِ الْجَنَّةِ

وَمِنْبَرِیْ عَلٰی حَوْضِی (صحیح بخاری)

" मेरे हुजरे और मिम्बर के दरम्यािन वाली जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर वाक़े है.”

मदीना मुनव्वराह के मुक़ामात की फ़ज़ीलत

•**मस्जिदे क़ुबा:** मदीना मुनव्वराह जाकर मस्जिदे क़ुबा की ज़्यारत के लिए जाना मुसतहब है.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:" जो शख़्स अपने घर से निकले और मस्जिदे क़ुबा आकर(दो रकअत नफ़िल)नमाज़ अदा करे उसे एक उमरे के बराबर सवाब मिलता है." (नसाई)

•बक़ी ग़रक़द: मुम्किन होतो जन्नतुल बक़ी में मदफ़ून लोगों की मग़फ़िरत की दुआ के लिए जाऐं. रसूल अल्लाह ﷺ मदीना तय्यबा के बक़ी ग़रक़द(जन्नतुल बक़ी) और शोहदाए ओहद की क़बरों की ज़्यारत के लिए जाया करते थे और उनके लिए ये दुआ करते थे.

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ وَأَتَاكُمْ مَّا تُوْعَدُوْنَ غَدًا مُؤَجَّلُوْنَ
وَاِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ الْبَقِيْعِ الْغَرْقَدْ

(صحيح مسلم)

“तुम पर सलामती हो घर वाले मोमिनो! और जिसका तुम वादा किए जाते थे वो कल तुम्हें जल्दी देदिया गया और अल्लाह ने चाहा तो तुमसे आ मिलने वाले हैं, ऐ अल्लाह! बक़ी ग़रक़द वालों की मग़फ़िरत फ़रमा.”

जबले ओहद: शोहदाए ओहद की ज़्यारत करते हुए जबल ओहद का मुशाहेदा करें. नबी ﷺ ने फ़रमाया "ओहद पहाड़ हमसे मोहब्बत करता है और हम उस से मोहब्बत करते हैं."(मुत्तफ़िक़ अलैह)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ग़ैर मसनून उमूर

•क़बर मुबारक के बाहर लगी जालियों को ना छुऐं,ना चूमें और ना इनसे चिमटें. यहां अपनी आवाज़ बुलन्द करने से भी बचें.

•रसूल अल्लाह ﷺ की क़बर मुबारक पर आवाज़ बुलन्द करना, क़बर मुबारक की तरफ़ नमाज़ की तरह हाथ बांधकर खड़े होना, रुकू या सजदा करना,तिलावत या ज़िक्र के लिए बैठना,उसका तवाफ़ करना या उसकी तरफ़ मुँह करके दुआ करना क़ुरआन मजीद और हदीस रसूल ﷺ से साबित नहीं है इस लिए इस से बचें. दुआ सिर्फ़ क़िबला रुख़ होकर करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

सफ़र वापसी

घर वापस आते हुए दिल में हमद वा शुक्र के जज़्बात हों,अल्लाह की किब्रियाई वा बड़ाई का ज़बान से इज़्हार करें.

सफ़र से वापसी की दुआऐं

اَللّٰہُ اَکْبَرُ ، اَللّٰہُ اَکْبَرُ ، اَللّٰہُ اَکْبَرُ ، سُبْحٰنَ الَّذِی سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہُ مُقْرِنِیْنَ ط وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ط اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْأَلُکَ فِی سَفَرِنَا ھٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی ، اَللّٰھُمَّ ھَوِّنْ عَلَیْنَا سَفَرَنَا ھٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَہٗ ،اَللّٰھُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْاَھْلِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَ کَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِیْ الْمَالِ وَالْاَھْلِ، آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ. (صحیح مسلم)

اَللّٰہُ اَکبَر، اَللّٰہُ اَکبَر، اَللّٰہُ اَکبَر पाक ज़ात है उसकी जिसने इस (सवारी)को हमारे बस में कर दिया हालांकि हमें इसे क़ाबू करने की ताक़त ना थी. ऐ अल्लाह! हम इस सफ़र में आपसे नेकी, तक़वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जो आपकी पसंद का हो. ऐ अल्लाह! हम पर इस सफ़र को आसान करदें और इसकी दूरी को लपेटदें. ऐ अल्लाह! आप सफ़र में(हमारे) साथी हैं और

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हमारे एहलो अयाल में हमारे ख़लीफ़ा हैं. ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की तक्लीफ़ से,बुरे मन्ज़र से और अपने एहलो अयाल में बुरी हालत के साथ वापस आने से आपकी पनाह तलब करता हुं. हम लौटने वाले हैं,तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, अपने रब की हमद करने वाले हैं." (सही मुस्लिम)

•एहले ख़ाना से मिलने पर दुआ करें.

اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَا يَغْدِرُ عَلَيْنَا حُوْبًا (معجم للطبرانی)

" पलटने वाले हैं,पलटने वाले हैं, हम अपने रब ही के हुज़ूर तौबा करते हैं. ऐसी तौबा जो हम पर गुनाहों का कोई असर बाक़ी ना रहने दे."

दावते तआम

आप ﷺ जब सफ़र से वापस लौटते तो उंठ या गाय ज़िबाह करते लिहाज़ा हुज्जाजे कराम सफ़र से वापसी पर इस सुन्नत पर अमल करें. (सही बुख़ारी)

हज के बाद

•हज से वापस आने के बाद हज वा उमराह के दौरान पेश आने वाले ख़ुशगवार तजरबात का ज़िक्र लोगों से करें.

•नाख़ुशगवार वाक़ियात का ज़िक्र करके अपना अजर ज़ाय ना करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•हज के दौरान की जाने वाली इबादत की रूह को वापस आने के बाद बरक़रार रखें.

•वापस आकर वक़्त पर बाजमाअत नमाज़ अदा करने की आदत को क़ाइम रखें.

•वापसी के बाद भी ग़ैर शरई और फ़ज़ूल काम करने से बचें.

•अल्लाह ताला से उम्मीद है कि उसने आपको हज मबरूर की सआदत दी होगी और सारे गुज़िश्ता गुनाह माफ़ कर दिए होंगे इस लिए आइन्दा के लिए पूरी शऊरी कोशिश के साथ अपने आपको गुनाहों से बचाऐं.

•अल्लाह ताला के साथ दुरुसत ताल्लुक़ के लिए क़ुरआन मजीद समझ कर पढ़ें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ज़मीमाजात

क़यामे मक्का वा मदीना के दौरान करने वाले काम

•क़यामे मक्का वा मदीना के दौरान अपने वक़्त को मुफ़ीद और ज़्यादा सवाब हासिल करने वाले कामों में सर्फ़ करें.

•मस्जिदे हराम में एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ों के बराबर और मस्जिदे नबवी में एक हज़ार नमाज़ के बराबर है इस लिए जितनी ज़्यादा नमाज़ें अदा कर सकते हैं करें.

•मस्जिद में कम से कम सामान लेकर जाऐं.

•फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में बाजमाअत अदा करें,मुनासिब जगह हासिल करने के लिए वक़्त से पहले मस्जिद पहुंचें.

•नमाज़ में सफ़ों की दुरुस्तगी का ख़्याल रखें.

•नमाज़ों के वक़फ़ों में नीन्द आजाए तो बेदार होने के बाद वज़ु करके नमाज़ पढ़ें. नीन्द आने से वज़ु नहीं रहता.

•ख़्वातीन बाल, बाज़ू और टख़ने ढांप कर नमाज़ पढ़ें.

•ख़्वातीन एसा सफ़ेद लिबास जिस से बदन झलकता हो पहन्ने से एहतयात करें.

•हरमैन शरीफ़ैन में ना फ़ारिग़ बैठें और ना ग़ैर ज़रुरी बातों में वक़्त ज़ाया करें.

•तिलावते क़ुरआन मजीद,ज़िक्रे इलाही या दरस वा तदरीस में वक़्त गुज़ारें.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•चने,खजूर और पानी की बोतल बेग में रखें ताके ज़रुरत के वक़्त इस्तेमाल कर सकें.

•मस्जिद में जितनी देर रहें आबे ज़म ज़म ख़ूब पिऐं. कोशिश करें के बहुत ठन्डा ना हो इस से ज़ुकाम और गला ख़राब होने का इमकान होता है. ठन्डे पानी के कूलर पर مبرّد और दूसरों पर غیر مبرّد के अलफ़ाज़ आसानी के लिए लिखे गए हैं.

•हर एक को मुसकुरा कर मिलें,सलाम में पहल करें.

•मिसवाक करना सुन्नत रसूल अल्लाह ﷺ है इसको अपनाऐं.

•मस्जिदे हराम के अन्दर रास्तों में खड़े होने या बेठने से परहेज़ करें.

•रासते में नमाज़ पढ़नी पड़ जाए तो मुकम्मल करते ही रासता छोड़दें. अगर उठने को कहा जाए तो फ़ौरन उठ जाऐं.

•लड़ाई झगड़ा,ग़ीबत, चुग़ली और धक्कम पेल से बचें.

•तहारत,सफ़ाई और पाकीज़गी का ख़ास ख़याल रखें.

•रोज़ाना ग़ुस्ल का एहतमाम करें और लिबास तबदील करें.

•लिबास,जिस्म,दांतों और जुराबों की सफ़ाई का ख़ास ख़्याल करें.

•मिना और अरफ़ात में सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखें.

•रास्तों,बाज़ारों और अपने आस पास गंदगी ना फेलाऐं. अपने पास पलास्टिक की एक थेली रखें जिसमें इस्तेमाल शुदा टिशू , जूस के ख़ाली डब्बे,पेपर गिलास वग़ैरा डाल सकें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

•अपना शनाख़्ती कार्ड और रहाइश का पता जैब या पर्स में रखें.

•आप अपना क़ीमती सामान व सफ़री दसतावीज़ात हरम के बाहर के सहन में बनाए गए लाकरज़ में भी रख सकते हैं.

•अचानक तबियत ख़राब होजाने की सूरत में हरम शरीफ़ के अन्दर,हर गेट के क़रीब बने क्लीनिक में जाऐं.

•ज़्यादा बीमारी की सूरत में मक्का में अजयाद हस्पताल में रिपोरट करें.

•आपका कोई साथी इन्तेहाई बीमारी की सूरत में हस्पताल में होतो आप इत्मिनान रखें.

•सऊदी हुक्काम ऐसे तमाम लोगों को एमबोलेन्स में ख़ुद अरफ़ात ले जाते हैं.

•अरबी ज़बान के कुछ शुरु के जुमले और गिन्ती सीख कर जाऐं.

•सब्र और इस्तक़ामत का दामन थामे रखें.

•अफ़वाहों पर धयान ना दें और सुनी सुनाई बात को बग़ैर तेहक़ीक़ के आगे ना पहुंचाऐं.

•मस्जिदे आयशा में नमाज़ पढ़ने के लिए या बार बार उमराह का एहराम बांधने के लिए वहां ना जाऐं.

•हर अमल सुन्नत रसूल ﷺ के मुताबिक़ करने की कोशिश करें ताके आप ज़्यादा से ज़्यादा अजर के मुस्तहिक़ हो सकें.

•मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी दोनों में दारुलअफ़ता मौजूद हैं इस लिए किसी भी सवाल या मसले के बारे में शरई हुक्म पूछने के लिए वहां राबता करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नमाज़ जनाज़ा की अदायगी

मस्जिद हराम और मस्जिद नबवी दोनों में फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद नमाज़ जनाज़ा अदा किया जाता है. नमाज़ जनाज़ा फ़र्ज़ कफ़ाया है और अमुमन मर्द हज़रात ही अदा करते हैं-उमराह और हज के दौरान ख़वातीन के लिए भी ये मौक़ा है के वो नमाज़ जनाज़ा अदा करें.

अबु हाज़िम अबु हुरैराह رضي الله عنه से रिवायत करते हैं के नबी ﷺ ने फ़रमाया:

जिसने किसी जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी उसके लिए एक क़ीरात(के बराबर अजर)है. और जो जनाज़े के साथ गया यहां तक के उसे क़ब्र में रखदिया गया उसके लिए दो क़ीरात(के बराबर अजर)है. रावी कहते हैं मैं ने अबु हुरैराह رضي الله عنه से पूछा क़ीरात से क्या मुराद है तो उन्हों ने कहा ओहद पहाड़ के बराबर. (सही बुख़ारी)

इस हदीस मुबारका में मर्द वा औरत की कोइ तफ़रीक़(फ़र्क़) नहीं की गई. अमूमन ख़वातीन महज़ लाइल्मी की वज्ह से इस अजर से महरूम रह जाती हैं.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नमाज़ जनाज़ा की अदायगी का तरीक़ा

नमाज़ जनाज़ा हालत क़याम ही में चार तकबीरात के साथ अदा करें. इस में रुकू, क़ोमा, सजदा या क़अदा नहीं हैं.

पहली तकबीर(اَللهُ اَکبَر)हाथ उठाकर कहें और सना वा सूरह फ़ातेहा पढ़ें.

दूसरी तकबीर(اَللهُ اَکبَر)कहें और दुरूदे इब्राहीमी पढ़ें.

तीसरी तकबीर(اَللهُ اَکبَر)कहें और मय्यत की बख़्शिश के लिए दुआऐं करें.

चौथी वा आख़री तकबीर(اَللهُ اَکبَر)कहें और सलाम फेरदें.

तीसरी तकबीर के बाद पढ़ी जाने वाली मय्यत बख़्शिश के लिए मसनून दआऐं.

(इन दुआओं में से जितनी मुम्किन हो याद करलें)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ وَارْحَمْهُ وَعَافِهٖ وَاعْفُ عَنْهُ وَ اَكْرِمْ نُزُلَهٗ وَوَسِّعْ
مُدْخَلَهٗ وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهٖ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا
نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهٖ
وَاَهْلاً خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَزَوْجاً خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهٖ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَ
اَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ (صحیح مسلم)

"ऐ अल्लाह इसकी बख़्शिश फ़रमा इस पर रहमत फ़रमा,और इस से दरगुज़र करके माफ़ फ़रमादे,और इसकी अच्छी मेहमानी कर और इसके दाख़िल होने की जगह कुशादा करदे और इसे पानी बर्फ़ और ओलों से धोडाल और इसे ख़ताओं से इसतरह साफ़ करदे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है और इसे इसके घर से बहतर घर और इसके धर वालों से बेहतर धर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

वाले और इसके साथि से बहतर साथिअता फ़रमा और इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और इसे अज़ाबे क़ब्र और आग के अज़ाब से बचा ले.”

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَ مَیِّتِنَا وَشَاھِدِنَا وَ غَائِبِنَا وَ صَغِیْرِنَا وَ کَبِیْرِنَاوَ
ذَکَرِنَا وَ اُنْثَانَا اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَہُ مِنَّا فَاَحْیِہٖ عَلَی الْاِسْلَامِ وَمَنْ
تَوَفَّیْتَہُ مِنَّا فَتَوَفَّہُ عَلَی الْاِیْمَانِ اَللّٰھُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَہُ وَلَا تُضِلَّنَا
بَعْدَہُ (سنن ابن ماجه)

"ऐ अल्लाह! हमारे ज़िन्दा,मुर्दा,हाज़िर,ग़ाइब,छोटे,बड़े,मुज़क्कर और मोअन्नस को बख़्शदे. ऐ अल्लाह! हम में से जिसको तू ज़िन्दा रखे पस तू इसको इस्लाम पर ज़िन्दा और जिसको तू हम में से फ़ौत करे उसको ईमान पर फ़ोत कर. ऐ अल्लाह! हमें इस (मय्यत के)अजर से महरूम ना कर और हमें इसके बाद गुमराह ना कर."

اَللّٰھُمَّ عَبْدُکَ وَ ابْنُ اَمَتِکَ اِحْتَاجَ اِلَی رَحْمَتِکَ وَ اَنْتَ غَنِیٌّ
عَنْ عَذَابِہٖ اِنْ کَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِیْ اِحْسَانِہٖ وَاِنْ کَانَ مُسِیْئًا
فَتَجَاوَزْ عَنْہُ (مستدرك للحاكم)

"ऐ अल्लाह! तेरा बन्दा और तेरी बन्दी का बेटा,तेरी रहमत का मोहताज है और तू उसके अज़ाब से बेपरवा है. अगर ये नेक था तो इसकी नेकियों में इज़ाफ़ा फ़रमा और अगर ये बुरा था तो इस से दरगुज़र करदे."

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद के मसनून अज़कार

اَللّٰہُ اَکبَر "अल्लाह सब से बड़ा है."(एक बार ऊंची आवाज़ में) (सही बुख़ारी)

اَستَغفِرُ اللّٰہ "मैं अल्लाह से बख़्शिश मांगता हूं."(तीन बार) (सही मुस्लिम)

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْکَ السَّلَامُ تَبَارَکْتَ یَا ذَا الْجَلَالِ

وَالْاِکْرَامِ (صحیح مسلم)

"ऐ अल्लाह! तू सलामती वाला है. और सलामती तेरी ही तरफ़ से है,ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले तू बहुत बाबरकत है."

رَبِّ اَعِنّیِ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ

(سنن نسائی)

"ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा के में तेरा ज़िक्र और शुक्र करता रहूं और अच्छे तरीक़े से तेरी इबादत करता रहुं."

رَبِّ قِنِیْ عَذَابَکَ یَوْمَ تَبْعَثُ اَوْ تَجْمَعُ عِبَادَکَ (صحیح مسلم)

"ऐ मेरे रब! मुझे अपने अज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा या जमा करेगा."

لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ط اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِىَ لِمَا
مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ (متفق عليه)

“अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं,वो अकेला है,उसका कोई शरीक नहीं,उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वोही हर चीज़ पर क़ादिर है. ऐ अल्लाह! जो तू अता करे वो कोइ नहीं रोक सकता और जो तू रोकदे वो कोइ नहीं दे सकता और किसी हैसियत वाले को उसकी हैसियत तेरे यहां फ़ायदा नहीं दे सकती."

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَ
هُوَعَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ط لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ (صحيح مسلم)

"अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं,वो अकेला है,उसका कोइ शरीक नहीं,उसी के लिए बादशाही है और उसीके लिए सब तारीफ़ है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है. नहीं है ताक़त गुनाह से बचने की और नहीं है ताक़त नेकी करने की मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से,नहीं है कोइ माबूद मगर अल्लाह,और हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं. उसी की नेमतें हैं और उसी का फ़ज़ल है. और उसी के लिए अच्छी तारीफ़ है,नहीं है कोइ माबूद मगर अल्लाह,उसी के लिए ख़ालिस करने वाले हैं दीन को अगरचे काफ़िर इसको नापसंद करें." (सही मुस्लिम)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنَ الۡجُبۡنِ وَ اَعُوۡذُ بِکَ مِنَ الۡبُخۡلِ وَ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ اَنۡ اُرَدَّ اِلٰی اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ وَ اَعُوۡذُبِکَ مِنۡ فِتۡنَۃِ الدُّنۡیَا وَ عَذَابِ الۡقَبۡرِ(صحیح بخاری)

"ऐ अल्लाह! मैं बुज़दिली और कनजूसी से तेरि पनाह चाहता हूं और इस बात से भी तेरी पनाह चाहता हूं के मुझे रज़ील उमर (बहुत बुढ़ापे)की तरफ़ फैर दिया जाए और में दुनिया फ़ितनों और अज़ाबे क़बर से तेरी पनाह चाहता हूं." (सही बुख़ारी)

سُبۡحَانَ اللّٰہِ (33 बार) اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ (33 बार)

اَللّٰہُ اَکۡبَرُ (33 बार)

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ لَہُ الۡمُلۡکُ وَ لَہُ الۡحَمۡدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ (मुस्लिम) (1 बार)

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अकेला है,उसका कोई शरीक नहीं,उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वोही हर चीज़ पर क़ादिर है. "

سُوۡرَۃُ الۡفَلَقِ (3 बार)

سُوۡرَۃُالنَّاسِ (3 बार)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَةُ الْكُرْسِیُ (1 बार)

سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ o وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ o

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o (3 बार) (جامع ترمذی)

"पाक है तेरा रब इज़्ज़त वाला,उन(बातों)से जो ये बनाते हैं. और सलाम हो सब रसूलों पर,और सब तारीफ़ हैं अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है."

चन्द क़ुरआनी वा मसनून दुआऐं

رَ بَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ o

(البقرة:201)

“ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा,और हमें आग के अज़ाब से बचा."

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ o رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ o (ابراھیم :41-40)

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ाइम करने वाला बना,ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा. ऐ हमारे रब!मुझे और मेरे वालिदैन को और सब ईमान वालों को उस दिन बख़्श देना जब हिसाब क़ाइम होगा.”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○ (المؤمنون:118)

" ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा और तू बहतरीन रहम फ़रमाने वाला है."

رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○

(الاعراف:23)

"ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया,अब अगर तूने हमसे दरगुज़र ना फ़रमाया और हम पर रहम ना किया तो यक़ीनन हम ख़सारा पाने वालों में से हो जाऐंगे."

لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○ (الانبياء:87)

“नहीं है कोई माबूद मगर तूही,पाक है तू,बेशक में ज़ालिमों में से हूं ."

رَبِّ اَوْزِعْنِیْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ

وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ط اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ

وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ (الاحقاف:15)

"ऐ मेरे रब! मुझे तोफ़ीक़ दे कि में तेरी इन नेमतों का शुक्र अदा करूं,जो तूने मुझे और मेरे वालिदैन को अता फ़रमाईं, और ऐसा नेक अमल करुं जिस से तू राज़ी हो,और मेरी औलाद की भी इसलाह फ़रमादे, में तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं और बेशक में फ़रमांबरदारों में से हूं."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِیْ صَغِيْرًا ۝ (بنی اسرائیل:24)

"ऐ मेरे रब! मेरे वालिदैन पर रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने बचपन में मुझे रेहमत व शफ़क़त के साथ पाला था."

رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ (التحریم: 8)

"ऐ हमारे रब! हमारा नूर हमारे लिए मुकम्मल करदे और हमसे दरगुज़र फ़रमा तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है."

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْیَا وَ الْمَمَاتِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَ الْمَغْرَمِ (صحیح مسلم)

"ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से आपकी पनाह चाहता हूं. और मसीह दज्जाल के फ़ितने और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से आपकी पनाह चाहता हूं. ऐ अल्लाह! मैं गुनाह और क़र्ज़ से आपकी पनाह चाहता हूं."

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ (مستدرک حاکم)

"ऐ अल्लाह मुझे अपनी हराम करदा चीज़ों की निसबत अपने हलाल के साथ किफ़ायत कर और मुझे अपने फ़ज़ल से,अपने अलावा हर एक से बेनियाज़ करदे."

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْھَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَ الْکَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّیْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ (صحیح بخاری)

"ऐ अल्लाह! मैं यक़ीनन में परेशानी और ग़म से और आजिज़ होने और काहिली से और बुज़दिली और बुख़ल से और क़र्ज़ के बोझ और लोगों के तसल्लुत से तेरी पनाह चाहता हूं."

اَللّٰھُمَّ رَحْمَتَکَ اَرْجُوْ فَلَا تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ کُلَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ (سنن ابی داؤد)

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत की उम्मीद रखता हूं,पस तू आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के सुपुर्द ना करना और मेरे लिए मेरे सारे काम संवारदे,तेरे सिवा कोई माबुद नहीं है.”

नोट: मज़ीद दुआओं के लिए हमारी किताब “क़ुरआनी मसनून दुआऐं” से इस्तफ़ादा करें.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.